थकना मत मेरे प्यारों

मैंने देखा कि जब कभी कोई ऐसा थका हुआ व्यक्ति ब्रह्माबाबा के पास आता तो वह उनकी परेशानी को एक सेकण्ड में समाप्त कर देते थे। वे हमेशा कहा करते थे कि परेशान क्यों होते हैं? जब अपनी वास्तविक शान अर्थात् 'हम किसकी संतान हैं' उसको भूल जाते हैं तो परेशान हो जाते हैं। वे हमेशा कहते थे कि जब आप देह से न्यारे रहेंगे तो थकावट नहीं होगी।

दीदी मनमोहिनी

कहावत है कि सच्चा योगी वह है जो निद्राजीत हो। उनके व्यस्त जीवन में मैंने सदा उनको निद्राजीत स्थिति में देखा। पिताश्री शत-शत विश्व कल्याण की सेवा में लगे रहते थे। वैसे तो हम सभी की प्रतिदिन की दिनचर्या ऐसे है जो दिन में 2 से 4 विश्राम का समय है परंतु पिताश्री जी केवल एक घण्टा विश्राम के लिए जाया करते थे। उसमें से भी बहुत कम समय आराम करते थे। उदाहरण के तौर पर जब भाई-बहनें यहां मुख्यालय से प्रस्थान करते समय पिताश्री जी से छुट्टी लेकर आते थे तो मैं हमेशा पिताश्री जी को यही कहती कि आप विश्राम से पहले उन्हें छुट्टी दें। लेकिन नहीं, उनका कहना था कि वह अपने बच्चों को उसी समय छुट्टी देंगे जब उनके जाने का समय होगा चाहे वह विश्राम का समय क्यों न हो। वे सदा हरेक बच्चे की सेवा के लिए तैयार रहते थे।

बाबा की निद्राजीत स्थिति व सर्व आत्माओं के स्नेह का उज्वलंत उदाहरण यह है कि वे हमेशा कहा करते थे कि बच्ची चाहे मैं सोया हूँ, परंतु अगर कोई बच्चा मुझसे मिलने आये तो मुझे तुरन्त जगाना। ऐसा न हो कि कोई बच्चा बाबा से मिलने से वंचित रह जाए।

मैंने देखा कि जब कभी कोई ऐसा थका हुआ व्यक्ति उनके पास आता तो वे उनकी परेशानी को एक सेकण्ड में समाप्त कर देते थे। वह हमेशा कहा करते थे कि परेशान क्यों होते हैं? जब अपनी वास्तविक शान अर्थात् `हम किसकी संतान हैं' उसको भूल जाते हैं तो परेशान हो जाते हैं। वे हमेशा कहते थे कि जब आप देह से न्यारे रहेंगे तो थकावट नहीं होगी। सदा अपने को आत्मा समझ उस पिता परमात्मा की स्मृति की शान में रहेंगे तो कभी भी परेशान नहीं होंगे।

मैंने देखा कि पिताश्री जी सदा इसी खुदाई नशे में रहते थे। सर्व प्रकार के कार्य करते हुए भी उनसे निर्लिप्त रहते। यही है उनकी महानता। पिता श्री जी के जीवन को देखकर अनेकों ने प्रेरणा ली।

हर समय हम बच्चों को भी शिक्षा देते हुए भी वे सदा न्यारा और प्यारा रहते थे। मेरा यह प्रैक्टिकल अनुभव है कि पिताश्री जी `सदा एक बल एक भरोसे रहते थे।' सदा एक बल एक भरोसा रहने से ही सफलता ही सफलता है। बाबा अपने अंतिम वर्ष में, जबकि वे अपनी कर्मातीत अवस्था के बहुत नज़दीक थे, बहुत ही उपराम रहने लगे थे। हमने देखा बाबा बहुत अधिक समय एकांत में मग्न अवस्था का अभ्यास करते थे। कोई भी बात उनके मन को विचलित नहीं करती थी। योग अभ्यास के द्वारा बाबा का शरीर भी सूक्ष्म हो गया था। वे इस धरती पर फरिश्ते नज़र आने लगे थे। उनका अंग-अंग शीतल रूप में देखा। `अंग-अंग शीतल होना सम्पूर्णता की निशानी है' यह उनके जीवन से प्रत्यक्ष हो गया था। उन्होंने हमें अपने ज़िम्मेदारी वाले जीवन में वो करके दिखाया जो अनुकरणीय है।

ब्रह्मा बाबा के... - पेज 6 का शेष

के अभ्यास द्वारा साइलेंस की शक्ति प्राप्त कर अनेक आत्माओं को जीयदान दिया। ऐसे फॉलो फादर करो। लाइट-माइट हाउस बन अनेक भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति कराओ।

7. ब्रह्मा बाप समान उपराम और नष्टोमोहा बनो।

जैसे ब्रह्मा बाप कहते - बच्चे यह तन मेरा नहीं, मैंने तो बाबा को लोन पर दिया है, यह हुसैन का घोड़ा है। यह सम्बन्धी भी मेरे नहीं, मैं तो स्वयं उनका बच्चा हूँ, इसी स्मृति से बाबा डबल लाइट बने। ऐसे फॉलो फादर कर देह और देह के सम्बन्धों से उपराम व नष्टोमोहा बनो।

जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं, शरीर में फंस नहीं जाते, ऐसे कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाओ। इसको कहा जाता है मेहमान और महान। इससे उपराम और नष्टोमोहा बन जायेंगे।

इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई अमानत समझकर सेवा में लगाओ। यह देह मेरी नहीं, सेवार्थ अमानत है। यह समझकर देह के भान से न्यारा बनो तो बाप समान उपराम व नष्टोमोहा बन जायेंगे।

परिवार में सेवा का पार्ट बजाते ट्रस्टी होकर रहो। मैं पुरुष हूँ, यह स्त्री है - यह भान स्वप्न में भी न आये। आत्मा भाई-भाई है, न कि स्त्री पुरुष, यह निमित्त मात्र सेवा अर्थ सम्बन्ध है। बाकी कम्बाइन्ड रूप आप और बाप हो, इस स्मृत्ति से नष्टोमोहा और उपराम बनो।

8. ब्रह्मा बाप समान प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनो।

प्योरिटी की पर्सनैलिटी के आधार से ब्रह्मा बाप वन नम्बर की पर्सनैलिटी की लिस्ट में आ गये। तो फॉलो फादर करो। स्वयं को मन, वाणी और कर्म में सम्पूर्ण प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनाओ।

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है, अपनी निजी वस्तु है। आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, सदा इस स्वमान में स्थित रह प्योरिटी की पर्सनैलिटी व अथॉरिटी का अनुभव करो।

जैसे अगरबत्ती की खुशबू खींचती है, वैसे आपके द्वारा सबको प्योरिटी की खुशबू का अनुभव हो। स्वयं का ऐसा स्वरूप बनाओ तो अब तक जो सेवा में एनर्जी और मनी लगानी पड़ती है वह काम आपके प्योरिटी की पर्सनैलिटी करेगी।

सारे दिन में जो भी बातें देखते व सुनते हो, अगर आपके काम की नहीं हैं तो सुनते हुए न सुनो, देखते हुए न देखो अर्थात् किसी की व्यर्थ बुराई को टच नहीं करो तब कहेंगे सच्चे वैष्णव व प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले।

9. ब्रह्मा बाप समान देह में रहते विदेही (अशरीरी) बनने का अभ्यास करो।

जैसे बाप सर्व के स्नेही तब बने जब देह में रहते विदेही बने। ऐसे विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे वस्त्र उतारना और पहनना सहज है, ऐसे अभी-अभी शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, अभी-अभी उतारा, यही मुख्य पुरुषार्थ करो तो मुख्य रत्नों में आ जायेंगे।

एक सेकण्ड में निराकार और एक सेकण्ड में साकार - अब ऐसी ड्रिल करो। आवाज़ में आते भी आवाज़ से परे रहने का अभ्यास करो। यही विदेही स्थिति का अभ्यास है, जिससे कर्मातीत स्थिति की समीपता का अनुभव होगा।

इस आकृति (देह) के अंदर जो आकर्षण रूप आत्मा है उसको देखने का अभ्यास करो। स्वयं की व दूसरों की आकृति को देखते हुए भी न देखो, देह की स्मृति से परे विदेही रहने का अभ्यास करो तो व्यर्थ संकल्प व कर्म से छूट जायेंगे।

10. ब्रह्मा बाप समान एवररेडी बनो।

जैसे ब्रह्मा बाप सदा एवररेडी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न रहे - ऐसे फॉलो फादर करो। अभी-अभी ऑर्डर हो कि दृष्टि को एक सेकण्ड में रुहानी व दिव्य बनाओ तो उसमें देह-अभिमान का ज़रा भी अंश न हो, एक सेकण्ड के बजाए दो सेकण्ड भी न लगे तब कहेंगे एवररेडी।

बाप समान एवररेडी रहने के लिए अपने हिसाब-किताब रूपी वृक्ष को लगन की अग्नि में समाप्त कर बीजरूप स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो। जब चाहो देहभान रूपी वस्त्र को धारण करो और जब चाहो न्यारे हो जाओ।

रुहानी सम्बंध और सम्पर्क निभाने में एवररेडी बनो। संस्कार मिटाने व मिलाने में टाइम न लगे। जैसे वह रास करते हो ऐसे बाप के संस्कार से संस्कार मिलाने की रास, आपस में श्रेष्ठ संस्कार मिलाने की रास करने में होशियार बनो।

जैसे मिलिट्री वालों का बिस्तरा हर समय तैयार रहता है, ऐसे आपका यह संकल्पों रूपी बिस्तरा सदा तैयार रहना चाहिए, एक सेकण्ड में अपने व्यर्थ संकल्पों को स्टॉप कर लो, ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो तब अंत समय में अपनी कमज़ोरियों को प्रायः लोप कर एवररेडी बन सकेंगे।